IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी चेतना के स्वर

सोमा सिंह
पी.एच. डी शोधार्थी, हिंदी विभाग
विश्वविद्यालय अहमदाबाद , गुजरात

डॉ प्रियंका कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग साबरमती
साबरमती विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात

सार

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में मुख्य रूप से नारी चेतना के विविध स्वर समाहित है। नारी संघर्ष के साथ नारी चेतना का स्वरूप मुखर करते इनके उपन्यास नारी विमर्श के प्रमुत्व हस्तादार है। उनके उपन्यास के नारी पात्र समय के साथ साथ अधिक जागृत होते दिखाते है। उनके उपन्यास के पात्र "सुषमा" का विकसित होते हुए राधिका, अनु, वाना, यमन आकाशगंगा बन कर स्त्री चेतना का समावेश करते हुए मुखर होती है।

चेतना से तात्पर्य ऐसी ज्ञानमूलक मनोवृति, जिसमे जीव आंतरिक अनुभूतियों और बाह्य घटनाओ के तत्वों से अनुभव प्राप्त कर ऐसी स्तिथि में आ पाते है कि बुरे परिणामो या बातों से बचकर अच्छी बातो की ओर प्रवृत हो सके। सोच समझ कर किसी बात की ओर ध्यान देने की सुविचारणा ही चेतना है। चेतना मानव जाति की मुख्य विशेषता है, चेतना शब्द आत्मा का समानार्थी भी माना जाता और आत्मा का निवास मानव शरीर में है। यूँ कहे कि "चेतन मानस की प्रमुख विशेषता चेतना है अर्थात 'विषयों, व्यवहारों का ज्ञान ।"1

बीज शब्द : नारी चेतना, नारी संघर्ष, नारी विमर्श विविध स्वर ,भावात्मक अभिव्यक्ति की संवेदना

परिचय

नारी का स्थान इतिहास में सर्वोच्च रहा है। "गारी मनुष्य के इतिहास की जानी मानी गयी ह। शास्त्रों के अनुसार सुकुमारता, सुन्दरता, प्रेम, वात्सल्य, दया और मधुरिमा की साकार प्रतिमा है नारी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी पुरूष की अनुगामिनी मात्र न हो कर सहचरी, सहधर्मिणी भी है। परंतु गारी के सम्बन्ध में कही गई यह धारणा निरंतर बदलती रही है। प्रत्येक युग परिवर्तन के साथ-साथ गारी की स्थिति में भी परिवर्तन होता रहा है।" एक मानवीय इकाई के रूप में सभ्यता और संस्कृति के सर्वांगीण विकास में स्त्रियों की भागीदारी हमेशा से महत्वपूर्ण रही है परिवार और समाज की सहभागिता के अतिरिक्त वह निर्तिवाद रूप में पुरुषो के आकर्षण का केंद्र भावनात्मक एंव शारीरिक दोनों रूपों में रही है। स्त्री अस्मिता को लेकर बाहरी और भीतरी स्तर का अन्तः संघर्ष लम्बे अरसे तक चला और समाजिक साहित्यिक विमर्श का एक स्वाभाविक एवं स्वास हिस्सा बन गया। "आधुनिक सन्दर्भ में स्त्री चेतना के आरम्भ की पहचान नवजागरण के उस अंकुर से की जा सकती है जिससे पराधीनता का बोध और उससे मुक्ति की अदम्य कमाना प्रस्फुटित हो रही थी ।"2 यही कारण है कि समकालीन

हिंदी साहित्य की केन्द्रीय संत दना कमा वेश स्त्री चेतना एवं संघर्ष के कई रूप एवं रंग दिखते है मृदुला गर्ग के अनुसार "चेतना का सम्बन्ध अपने परिप्रेक्ष्य में रखकर अपनी स्थिति का मूल्या कन करना है। चेतना के सहारे व्यक्ति निजी जीवन दृष्टी से प्रेरित होकर इतिहास, संस्कृति और मानवीय संबंधो को पुनः विश्लेषित करता है इस प्रकार जो दृष्टी नारी की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक छवि के तिलिस्म का तोड़े वह नारी चेतना है।" यह स्त्री-चेतना समाज स्त्री की समानता की बात एक सुविचारणा के माध्यम से व्यक्त करती है। समाज में स्त्री के उचित स्थान की मांग करते हुए महादेवी वर्मा अपने शब्दों में व्यक्त करती है. "हमे न किसी की जय चाहिए, न किसी का प्रभुत्व केवल वह अपना स्थान वे स्वत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है परंतु जिनके बिना समाज का उपयोगी अंग नही बन सकेगी ।"3 स्त्री चेतना या स्त्री विमर्श की आवश्यकता समाज में स्त्रियों को क्यों पदी १ इस प्रश्न के उत्तर में अनेक युक्तियों को सम्मिलित विश्या जा सकता है। एक स्त्री हमेशा केवल इतना चाहती है कि उसे वस्तु नही बल्कि 'मनुष्य' के रूप में देखा जाए। यह बोध भी 'स्त्री चेतना कहलाती है।

उषा प्रियंवदा उन कथाकारों में से एक है। जिन्होंने आधुनिक जीवन की ऊब स्टपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की अनुभूति के सार को पहचान कर अपने रचनाओ में व्यक्त किया है। उनकी अधिकांश रचनाओ में उन्होंने स्त्री जीवन की विभिन्न प्रकार की सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक समस्याओ को स्त्री चेतना की सुविचारणा के माध्यम से अभिव्यक्ति दि है। उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में आधुनिक परिवेश में उदित नारी या चित्रण है। स्वतन्त्रता के बाद जो परिवर्तन नारी जीवन में आये पुराने मूल्यों को ना करने तथा नये मूल्यों को आत्मसात करने के परिणाम सूक्ष्मता से व्यक्त हुआ है। उषा प्रियंवदा के प्रमुख उपन्यास पचपन स्वम्ने लाल दीवारे. रुवप्रेभी नहीं राधिका, शेषयात्रा. अंतर्वशी. भया कबीरा उदास. नदी है। इन उपन्यासों की अधिकांश कथाओ में आधुनिक नारियो के जीवन की झाँकियों प्रतिफलित हुई है. उनके ये उपन्यास मुख्यतः स्त्री-चेतना केन्द्रित और विशेषतः नायिका प्रधान है। स्त्री की नियति अस्मिता. दुःख-दर्द. जीवन संघर्ष तथा घुटन के साथ साथ उसका शिक्षित होना नौकरी करना परिवार का भरण-पोषण करना व्यवसाय करणा. नेतृत्व करना. अभ्यास अत्याचार के प्रति विद्रोह करना. स्त्री पात्रो का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करना उषा जी की स्त्री-चेतना को उजागर करने में अत्यधिक कारगर सिद्ध होते है। इस तरह उषा जी तो नारी जीवन के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक जीवन की गतिविधियों का चित्रण अपने साहित्य में किया है।

उषा प्रियंवदा का पहला उपन्यास है "पचपन खम्बे लाल दीवारे"। इस उपन्यास में उषा जी तो सुषमा जैसे पात्र के माध्यम से आधुनिक भारतीय नारी की ऊब स्टपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की स्थिति में नारी की सामाजिक आर्थिक विवशताओ से जन्मी मानसिक यंत्रणा का बड़ा ही मार्मिक चित्र नत्रावास के पचपन स्वंसे और लाल दीवारों के बीच सुषमा की स्टपटाहट के माध्यम से उद्‌घाटित किया है। उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'पचपन स्वम्बे लाल दीवारे की नायिका सुषमा अपने परिवार की आर्थिक परेशानी को दूर करने के लिए शादी नहीं करती है सुशिक्षित सुषमा नौकरी पेशे से युक्त होते हुए भी वे रुदिग्रस्त समाज और नैतिक वर्जनाओ के साथ परिवार की समस्याओ को झेलती हुई अविवाहित रह जाती है। मध्यमवर्गीय समाज में सुषमा जैसे पात्र माता-पिता. भाई-बहन सभी अपनी इत्त्नओ की पूर्ति के लिए नौकरी करती हुई तिल-तिल जलकर अपने सामाजिक दायित्व का पालन करती कब बूढ़ी हो जाती है उसे खुद पता नही चलता है। वह अपने परिवार के लोगो को पालने की मशीन बन कर रह गई है और वह इन संबंधी से इतना ऊब जाती है कि सारे संबंध उसे काटने को दौड़ते है. सुषमा के जीवन से निराश हो कह बैठती है। "यह कलिया ये खम्बे मेरी डेस्टिनी है मुझे यह तोड़ दो।"4 सुषमा के जीवन में नील नामक एक पुरुष आता है अपने और एंकाकी जीवन में उसके प्रेम की स्निग्धता और आत्मीयता पाकर सुषमा पुलकित हो उठती है। अपने प्रेमी नील की बाँहों के मजबूत होरे में सुषमा अपनी सारी पीड़ा और चोट फूल जाती है. वयोंकि नील एक कवच के समान उसकी समस्त आपत्तियों तथा समस्याओ से बचाए रखता है अपने ऐसे प्रेमी को भी वह यह कह कर निष्कासित करने के लिए विवश हो उठती है कि "मेरी बहुत जिम्मेदारियां है। तुमसे तो कुछ भी लिया नहीं है।

पक्षाघात से पीड़ित बाहू. दो बहने और भाई. सब मुझे करना है।" अंततः वह अपने प्रेम भावना या दमन अपने परिवार के लिए कर देती है। फिर भी उनके कार्य की सराहना की अपेक्षा बदनामी ही लोगो के पास पहुँच जाती है। कामकाजी नारी के विषय में 'डॉ. प्रमिला कपूर का कथन है"5 यह शब्द उन स्त्रियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो वेतनताले काम धंधो में लगी है. उनके लिए नहीं जो समाज सेवा में रत है या अवैतनिक रूप से काम कर रही है । इस बात की पुष्टि 'सिनोम ८ बुआर के शब्दों में भी मिलती है जब वे कहती है "स्त्री पैदा नहीं बल्कि उसे बना दिया जाता है।" बेटी. पत्नी बहू और माँ की भूमिका से अलग उन्हें स्टांय अपनी भूमिवग वा एहसास और विश्वास होना. वक्त का तवाजा है। सुषमा अविवाहित रहकर चूँकि अपनी सार्थकता नहीं सिद्ध कर पाती है इसलिए उसका निर्णय उसकी नौकरी. उसकी आध निकता सभी कुछ स्त्री चेतना के ही अन्तर्गत है।

अपने चर्चित उपन्यास 'रुको नहीं राधिका में उषा जी ने आज के मानसिकता में गहरे उतर कर नारी की बदलती हुई मान्यताओ, विश्वासों और परिस्थितियों के बदलाव को अपनी लेवनी का आधार बनाया है। उषा जी तो अत्याधुनिक असामान्य नारी को समझने और समझाने का प्रयत्न किया है। 'रुकोनी नहीं राधिका कीराधिका एक सुरवी परिवार की एकमात्र बेटी है। उसके पिता, भाई भाभी सभी उसे प्यार करते है। माता के मरने के बाद वह पिता के अधिक निष्ट हो गयी है। किन्तु पिता की शारीरिक आवश्यकता 'विगा से विवाह करके पूरी होती है 'विना राधिका के पिता से लगभग बीस वर्ष जेटी है. यह बात राधिका को विरक्ति करने लगती है और पिता के प्रति एक विरक्ति का भाव उसके मन में पैदा होने लगता है यह जख्म राधिका के मन को जिंदगी भर अपने पापा के घर में ही उसे अजाबी बनकर अकेलेपन की जिंदगी जीने के लिए मजबूर कर देता है। उसका अमेरिका जा कर अस्थायी रूप से अमेरिका में रह कर के कार्यों में सहयोग करना. पुनः स्वदेश लौटने पर 'रिवर्स कल्चरल शॉक से गुजरती हुई ऐसा महसूस करती है कि "मेरा परिवार मेरा परिवेश मेरे जीवन की अर्थहीनता और मैं स्वंय जो होती जा रही हूँ. एक भावहीन पुतली सी ।" यह सब राधिका के जीवन के अजनबीपन और संत्रास को प्रदर्शित करता है।

यह उपन्यास स्त्री चेतना के साथ ही आधुनिक समाज में बदलते रिश्तो की प्रकृति से तालमेल व बैठा पाने वाले अनेक व्यक्तियों और संबंधो को सूक्ष्म रूप से वोजती है। एक पिता का असामान्य व्यवहार के कारण सामान्य सन्तान अन्तर्विरोधो. विसंगतियों. संत्रास. घुटन आदि का शिकार बन जाती है। डॉ वाघृणय लिखते है कि "राधिका स्वतन्त्रता का विकास चाहती है. परम्परागत संस्कारी को तोड़ना चाहती है. अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करना चाहती है।"6 स्पष्ट है कि राधिका अपने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिए समाज द्वारा दी गई नैतिकता. रुलियाँ और परम्पराओ की अवहेलना करती है जो आधुनिक स्त्री चेतना के रूप में सामने आती है। लेखिका ने राधिका के द्वारा हमारे समाज की उन थोड़ी बहुत जागरूक स्त्रियों के जीवन की त्रासदियों दुःस्वों और बाधाओ की बड़ी बारीकी से सामने रखा है जो हर मूल्य पर नारी की समानता और स्वाभिमान को बनाये रस्वने के लिए संघर्ष करने में विश्वास करती है। वह व्यक्तित्व के सब बंधन तोड़ने वाली नारी के विद्रोह का प्रतीक बन कर उभरती है। वह किसी की इल्लओं के सामने नहीं झुकती और अपना निजित्य समाप्त करने के बजाय अलग हो जाना बेहतर समझती है।

उषा प्रियंवदा जी का उपन्यास 'शेषयात्रा स्त्री चेतना को एक नयी दिशा प्रदान करता है। इस उपन्यास को नारी जीवन की त्रासद स्तिथियों एवं उन त्रासद परम्परागत सम्थ्यहीनाता को तोड़ने का एक सबल दस्तावेज कहा जाता है। उपन्यास की नायिका 'अनु के माध्यम से उषा जी ने विदेश की भूमि में पुरुष के विश्वासतात भारतीय वफादार पत्नी (अनु) के सामने पैदा होने वाली समस्याओ को सामने रखा है। इस उपन्यास में प्रवासी भारतीयों का ऐसा समाज उभर कर आया है जिसमे हर स्त्री अपने को असुरक्षित महसूस करती है. अपने पति की गतिविधियों के प्रति सतर्क रहने के बाद भी पतिव्रता स्त्री 'अनु का पति प्रणव अनु को छोड़ कर कई अन्य स्त्रियों से गूढ़ सम्बन्ध बनाता है और वफादार पत्नी अनु को असत्य अकेलापन में छोड़कर चला जाता है। अनु की समस्या आज के जन-सामान्य की समस्या बन कर उभर कर आती है।

अंतर्वशी उपन्यास स्त्री चैतना एक अनोरवा जीवन्त चित्र प्रस्तुत करता है। स्त्री जीवन शैली में आये बदलाव वा दिग्दर्शन इस उपन्यास में हुआ है. जो पारिवारिक मान्यताओ के कारण अपने मन की व सुनकर सभी पम्पराओ और मान्यताओ को अनमने भाव से निभाती जाती है परन्तु अंततः वह विरोध करके अपने 'स्व' को स्वीकारती है। ताना जो बनारस की बाँसुरी थी 'अमेरिका में रहने वाले प्रवासी भारतीय 'शिवेश से विवाह करके अपने घर परिवार का भी परित्याग करके विदेश आ जाती है। भारतीय मध्यवर्गीय परिवार अपनी कन्या का विवाह शिवेश जैसे प्रवासी से कराकर बहुत खुश होते है परन्तु वाना या मोहभंग तब होता है जब अमेरिका आने का सौभाग्य दुर्भाग्य में परिणित होता प्रतीत होता है। भारतीय मध्वर्गीय परिवार बेहतर अवसर की खोज में विदेशी जीवन शैली से प्रभावित होकर प्रवासी भारतीयों से अपनी कन्याओ का विवाह करा देना पर स्वयं को बहुत सौभाग्यशाली समझाने लगते है परन्तु विदेश जाने के बाद शुरू होता है संघर्ष और मोहभंग का अटूट सिलसिला। विदेशी समाज में लोग एक दुसरे से आगे जाने और सफलता पाने के पागल दौड़ में रत है औरो की उपलब्धियों और लाचारी के कसमकस में पड़ी वाना जैसे-तैसे गृहस्थी की गाडी स्वीचती हुई स्वाभाव से कुकुर भिन्न हो जाती है। पति शिवेश की असमर्थताओ का दमघोट एहसास उसे क्रमशः पति के प्रति संवेदनहीन बना देता है जिसकी परिणति होती है उनके बीच का दामपत्य सम्बन्ध में ठंडापन आ जाता है। फिर भी एक पत्नी की भूमिका वाना निभाने को मजबूर है।

'भया कबीर उदास उपन्यास में लेविया ने बिलकुल नयी सी दिखने वाली कथा-भूमि पर मानव मनन की चिरंतन लालसाओ. कामनाओ. उदासियो और निराशाओ का अत्यंत सहज ढंग से अंकन किया है। उपन्यास की नायिका लिली पाण्डेय (यमन) पैतीस साल की अविवाहित नारी है। वाइस चान्सेलर पिता और हिंदी परिवेश वकी अंग्रेजी मम्मी की एकलौती संतान है जो पी एच डी करने अमेरिका गई है। लिली प्रतिभाशाली और बुद्धिशाली होने के कारण जीवन में पुरुष की आवश्यकता महसूस नही करती नायिका विदेश की भूमि में अपना सहज और अल्पवकांक्षी जीवन जी रही होती है कि जाँच के बाद डॉ हैदर और डॉ अंजली से अचानक उसे ज्ञात होता है कि उसे 'स्तन कैंसर है और यह बीमारी इलाज के बाद अंततः उसके शरीर का सबसे प्रिय अंग से उसे वंचित कर देती है। शरीर की पूर्णता-अपूर्णता के प्रश्न किसी न किसी स्तर पर मन और जीवन की पूर्णता से जुड़ा होता है परन्तु लिली इन सामजिक रूढ़ियो को तोड़ती हुई अपूर्ण शरीर के होने के बाद भी जीवन से अपना अधिकार लेकर रहती है. जो एक स्वस्थ और सम्पूर्ण देह वाले व्यक्तियों क लिए स्वाभाविक है ,जीवन के प्रति सदा सकारात्मक रह कर लिली रेडियोथेरेपी के बाद भारत लौटकर मर्मों से पुनः मिलकर मृत्यु के भय से मुक्त होकर 'वनमाली नामक पुरुष को स्वीकार करती है। वह अब खुश है इसकी सार्थकता इन पंक्तियों में झलकती है-"वनमाली के साथ नीचे जाते हुए यमन वा मन हो आया की कोई प्रार्थना करे। रवीन्द्रनाथ की पंक्तियों का भाव दोहराते हुए मन ही मन कहा प्रभु मै ऐसे ही नत और प्रस्तुत रहूँ और तुम मेरी अंजुली बार-बार भरते रहना ।"7

'गदी उपन्यास 'स्त्री विमर्श की दृष्टी से एक वर्चित उपन्यास है। स्त्री जीवन की रिक्तता अकेलेपन शून्यता. नीरसता. उदासीनता. उसकी दुविधा घुटन त्यर्थ की सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति की आकांक्षा मोहभंग स्त्री-पुरुष के बदलते संबंधों तथा उनसे उपजने वाली मानसिक अन्तर्दवंद आदि का वित्रण करते हुए "स्त्री स्वाधीनता के अनेक प्रश्नों को उठाने का प्रयत्न उषा जी ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से किया है। प्राचीन रूढ़ियों और परम्परा सी टकराकर अपने 'स्व' और अस्मिता की स्वोज करते हुए बस बहने दो जीवन सरिता को कही-न-कही जल्दी या देरी से कोई-न-कोई हल तो निकलेना" इस सूत्र पर आधारित है। विदेश में निवास करती 'आकाशगंगा के पांच वर्ष क पुत्र भविष्य की मृत्यु 'बाल ल्यूकीमिया से हो जाने पर पति डॉ गणेद्र सिन्हा द्वारा इस हद तक पुत्र की मृत्यु की उत्तरदायी मानी जाती है कि परिवार से विहिन कर दी जाती है। पति मनगेन्द्र दो बेटियों सहित गंगा के पासपोर्ट आदि जरूरी कागजाद अपने साथ लेकर भारत लौट आते है जब गंगा अपने किसी संबंधी के घर गयी रहती है। यही से एकांकी छुट गई आकाशगंगा का संघर्ष प्रारम्भ होता है। विदेश की धरती पर बिना किसी पहचान के रहना एक स्त्री या एक पुरुष के लिए भी कितना कठिन है यह तो समझ ही सकते है। गंगा निरुपाय होकर

अर्जुन सिंह और एरिक के प्रगाढ़ सम्पर्क में आती है। पति मगनेन्द्र के इस दुयवहार के कारण उसका मन पति के प्रति विद्रोही हो जाता है

तभी वह एरिक से कहती है वही एरिक युटुल भी हो मई उनसे समझौता नही करूँगी ग उन्होंने मुझे बहुत रौदा. बहुत कुचला और अंत में फटे चीशले की तरह फूड़े-कचरे की तरह घर से निकाल कर फेक दिया। मैं सम्मान से जीना चाहती हूँ भले ही मुझे झाडू लगाने का काम करना पड़े। पयोंकि पति द्वारा दिया गया हर जख्म उसके जीवन का नासूर बन गया था गंगा पति द्वारा त्याने जाने पर भी सामर्थ्य हीन नही होना चाहती। पुत्रियों के प्रति प्रेम- भाव के वशीभूत होकर भारत लौटकर सास-ससुर बेटियों के आत्मीयता से गिरने मिलने है। भारत में लौट कर भी वह इस तरह असंतुष्ट रहती है कि एक प्रायः अप्रत्याशित स्थिति उसे पुनः दूर देश ले जाती है। बेबसी निष्क्रियता वा परित्याग करते हुए प्रवीण दम्पति के साथ रहकर गंगा जीवन का एक व्य अध्याय शुरू करती है. और एरिक के साहचर्य से उत्पन्न अपणे प्राणप्रिय पुत्र 'स्तत्य स्टीवन के जन्म देकर पुनः भविष्य के तरह न रखोगे के भी से. बेटा नार्मल स्वस्थ रहे इसलिए अपने से अलग करके कैथरीन बसबी को देकर अपने दिल पर पत्थर रख लेती है। आकाशगंगा अपने जीवन प्रवाह में जिन ऊँचाइयों गहराइयों मैदानों माटियों संकीर्ण पथो प्रशस्त पाटो से गुजरती है उन्हें उषा प्रियंवदा ने जीवंत कर दिया है। आकाशगंगा से उषा जी स्त्री जीवन के कटु यथार्त का मार्मिक चित्रण किया है। इन समस्याओ का सामना करने क बाद भी जीवन पहचाती हुई गंगा मान लेती है - "गदी अपना सुंदरवन स्वोज ही लेनी अपना लक्ष्य सागर ।"8

निष्कर्ष:

उषा प्रियंवदा जी ने स्त्री जीवन के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक जीवन के विभिन्न गतिविधियों का जीवंत चित्रण अपने साहित्य में किया है। उषा प्रियंवदा ने नारी जीवन की विसंगतियोः गई परिस्थितियों तथा उलझनपूर्ण मनः स्थितियों में नारी के मिसफिट होने की प्रवृति को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। आज स्त्री की बदलती हुई मान्यताओ विश्वासों और परिस्थितियों के बदलाव को लेखिका ने अपनी कलम का आधार बनाया है। आज का व्यक्ति नई परिस्थिति में स्वंय से टूटते हुए जिंदगी से जूझते हुए आर्थिक संकट से संघर्ष कर रहा है स्त्री अस्मिता को लेकर बाहरी और भीतरी मोर्चे का अंतः संघर्ष लम्बे अरसे तक चला और इसे सामाजिक-साहित्यिक विमर्श का स्वाभाविक हिस्सा उषा जी ने बनाया है। इस प्रकार हम देख सकते है की उषा जी नारी अपने स्वत्व को पाने के लिए संघर्ष करती हुई आगे बढ़ती है और अंततः अपने अस्तित्व को पाने में वह सफलता प्राप्त करती है। उषा जी की लेखन यात्रा जैसे-जैसे आगे बढ़ती गई है वैसे ही उनकी नारी विकसित होती गई है। सुषमा जहाँ कुंठा और शोषण वा शिकार होती है वही राधिका बिस्वरती है और यही से शुरू होती है अनु की शेषयात्रा. जिसे वाना पूरी करती है। वह न तो सुषमा की तरह सामाजिक शोषण का शिकार होती है और ना ही राधिका की तरह भटकती है अनु पति के प्रेम पाने के लिए उसके सामने गिडगिडाती भी नहीं है। वह तो एक ही झटके में तमाम बन्धनों को तोड़ कर अपने स्वत्व को प्राप्त कर लेती है। यमन तक आते उनकी नारी संत कबीर की पंक्तियों पर अग्रसर खुद को कथनमुक्त करके नया जीवन जीने के लिए प्रस्तुत हो जाती है तो गदी आते आते 'गंगा' नामक स्त्री अपना सुन्दरखन स्वोज कर अपने जीवन का लक्ष्य पा लेती है।

संदर्भ सूचि

१. प्रियंवदा उषाः मेरी कहानियाँ दिल्ली वाणी प्रकाशन संस्करण, २०००

२. देसाई, नीरा तीमन इन माईन इण्डिया. मुम्बई. प्रथम संस्करण. १९५७

३. त्यास. भोला संस्कृत-कवि-दर्शन, वाराणसी चौरवम्बा विद्या भवन तृतीय संस्करण, १९६१

४. विद्यालंकार, सत्यकेतु भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास. मंसूरी सरस्वती सदन, संस्करण. १९६१

५. महात्मा गाँधी महिलाओं से गांधी ग्रन्थागार सं० १९६२

६. कमलेश्वर नयी कहानी की भूमिका. दिल्ली अक्षर प्रकाशन. द्वितीय संस्करण. १९६९

७. हरिदंत. वेदालंकार भारत का सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली आत्माराम एण्ड संस तृतीय संस्करण. १९६२

८. प्रियंवदा. उषाः पचपन खंबे लाल दीवारण, नई दिल्लीः राज कमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण. १९८१

९. प्रियंवदा. उषा फिर बसंत आया. दिल्लीः सरिता प्रेस. प्रथम संस्करण. १९६१

१०. प्रियंवदा उषाः जीवन और फूल नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण. १९६१

११. प्रियंवदा. उषाः रुकोगी नहीं राधिका. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन. प्रथम संस्करण. १९६८

१२. प्रियंवदा उषाः एक कोई दूरी, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. संस्करण. १९७२

१३. प्रियंवदा. उषाः कितना बड़ा झूठ, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण. १९७२

१४. प्रियंवदा. उषा शेष यात्रा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण. १९८४